AV & AVS Education

Your child is our responsibility.

Website - Avashishbhaiya.com

Notes available – PDFs, PYQs, Sample paper, Imp. Que.

Nationalism in India

- **1870** बंकिमचंद्र द्वारा वंदेमातरम की रचना हुई ।
- **1885** में कांग्रेस की स्थापना बम्बई (मुम्बई) में हुई । व्योमेश चंद्र बनर्जी कांग्रेस के प्रथम अध्यक्ष बने ।
- लार्ड कर्जन ने **1905** में बंगाल के विभाजन का प्रस्ताव किया ।
- **1905** में अबनीन्द्रनाथ टैगोर ने भारत माता का चित्र बनाया ।
- **1906** में आगा खां एवं नवाब सलीमुल्ला ने मुस्लिम लीग की स्थापना की ।
- **1907** में कांग्रेस का विभाजन नरम दल एवं गरम दल में हुआ ।
- **1914** में प्रथम विश्व युद्ध का आरम्भ ।
- **1915** में महात्मा गाँधी की स्वदेश वापसी ।
- **1917** में महात्मा गाँधी ने नील कृषि के विरोध में चंपारण में आंदोलन किया ।
- **1917** में महात्मा गाँधी ने गुजरात के खेड़ा जिले के किसानों के लिए सत्याग्रह किया ।
- **1918** में महात्मा गाँधी ने गुजरात के अहमदाबाद में सूती कपड़ा मिल के कारीगरों के लिए सत्याग्रह किया ।
- **1918** में प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति हुई ।
- **1919** में ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों पर रॉलट एक्ट जैसा काला कानून दिया ।
- **13 अप्रैल 1919** में जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड हुआ ।
- **1919** में खिलाफत आंदोलन की शुरुआत मुहम्मद अली व शौकत अली ने की ।
- **1922** में चौरी – चौरा में हुई । हिंसक घटना के बाद महात्मा गाँधी ने असहयोग आंदोलन को वापस ले लिया ।
- **1928** में साइमन कमीशन भारत आया जिसका विरोध करते हुए लाला लाजपत राय की मृत्यु हुई ।
- **8 अप्रैल 1929** को भगत सिंह व बटुकेश्वर दत्त ने असेम्बली पर बम फेंका
- **12 मार्च 1930** को महात्मा गांधी ने साबरमती से दाण्डी यात्रा आरम्भ की ।
- **6 अप्रैल 1930** को दाण्डी पहुँच कर महात्मा गाँधी नमक कानून तोड़ा व सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरूआत की ।
- **1930** में डॉ अम्बेडकर ने अनुसूचित जातियों को दमित वर्ग एसोसिएशन में संगठित किया ।
- **23 मार्च 1931** को भगत सिंह , सुखदेव एवं राजगुरू को फांसी दे दी गई ।
- **1931** गांधी इरविन समझौता व सविनय अवज्ञा आंदोलन को वापस ले लिया ।
- **1932** मे महात्मा गांधी एवं अम्बेडकर के मध्य पूना पैक्ट हुआ ।
- **1933** में चौधरी रहमत अली सर्वप्रथम पाकिस्तान का विचार सामने रखा ।
- **1942** में भारत छोड़ो आंदोलन की शुरूआत व गांधी जी ने करो या मरो का नारा दिया ।
- **15 अगस्त 1947** को भारत आज़ाद हुआ ।

राष्ट्रवाद का अर्थ

अपने राष्ट्र के प्रति प्रेम की भावना एकता की भावना तथा एक समान चेतना राष्ट्रवाद कहलाती है ।

प्रथम विश्वयुद्ध का भारत पर प्रभाव तथा युद्ध पश्चात परिस्थितियाँ

- युद्ध के कारण रक्षा संबंधी खर्चे में बढ़ोतरी हुई थी ।
- इसे पूरा करने के लिए कर्जे लिये गए और टैक्स बढ़ाए गए ।
- अतिरिक्त राजस्व जुटाने के लिए कस्टम ड्यूटी और इनकम टैक्स को बढ़ाना पड़ा ।
- 1913 से 1918 के बीच दाम दोगुने हो गए ।
- ग्रामीण इलाकों से लोगों को जबरन सेना में भर्ती किए जाने से भी लोगों में बहुत गुस्सा था ।
- भारत के कई भागों में उपज खराब होने के कारण भोजन की कमी हो गई ।
- फ़्लू की महामारी ने समस्या को और गंभीर कर दिया ।
- 1921 की जनगणना के अनुसार , अकाल और महामारी के कारण 120 लाख से 130 लाख तक लोग मारे गए ।

महात्मा गांधी के सत्याग्रह का अर्थ

- सत्याग्रह ने सत्य पर बल दिया ।
- गांधीजी का मानना था कि यदि कोई सही मकसद के लिए लड़ रहा हो तो उसे अपने ऊपर अत्याचार करने वाले से लड़ने के लिए ताकत की जरूरत नहीं होती है । अहिंसा के माध्यम से एक सत्याग्रही लड़ाई जीत सकता है ।

महात्मा गाँधी द्वारा भारत में किए गए सत्याग्रह के आरंभ

- महात्मा गांधी 1915 में दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे थे ।
- गांधीजी की जन आंदोलन की उपन्यास पद्धति को ‘ सत्याग्रह के नाम से जाना जाता है ।
- भारत में सबसे पहले चंपारण (बिहार) 1917 में दमनकारी बागान व्यवस्था के खिलाफ नील की खेती करने वाले किसानों को प्रेरित किया ।
- 1917 में खेड़ा गुजरात किसानों को कर में छूट दिलवाने के लिए उनके संघर्ष में समर्थन दिया
- फसल खराब हो जाने व प्लेग महामारी के कारण किसान लगान चुकाने की हालत में नहीं थे ।
- अहमदाबाद (गुजरात) 1918 में कपड़ा कारखाने में काम करने वाले मजदूरों के समर्थन में सत्याग्रह आंदोलन किया

रॉलट ऐक्ट 1919

राजनीतिक कैदियों को बिना मुकदमा चलाए दो साल तक जेल में बंद रखने का प्रावधान ।

रॉलट ऐक्ट के परिणाम

- 6 अप्रैल को महात्मा गांधी के नेतृत्व में एक अखिल भारतीय हड़ताल का आयोजन ।
- विभिन्न शहरों में रैली , जूलूस हुए।
- रेलवे वर्कशॉप्स में कामगारों का हड़ताल हुई । दुकाने बंद हो गई ।
- स्थानीय नेताओं को हिरासत में ले लिया गया ।
- बैंकों , डाकखानों और रेलवे स्टेशन पर हमले हुए ।

- इंपीरियल लेगिस्लेटिव काउंसिल द्वारा 1919 में रॉलैट ऐक्ट को पारित किया गया था । भारतीय सदस्यों ने इसका समर्थन नहीं किया था
- अंग्रेजी हुकूमत ने राष्ट्रवादियों पर कठोर कदम उठाने का निर्णय लिया । कई स्थानीय नेताओं को बंदी बना लिया गया । महात्मा गांधी को दिल्ली में प्रवेश करने से रोका गया ।

जलियावाला बाग हत्याकांड की घटना

- अमृतसर में मार्शल लॉ लागू हो गया और इसकी कमान जेनरल डायर के हाथों में सौंप दी गई ।
- जलियांवाला बाग का दुखद नरसंहार 13 अप्रैल को उस दिन हुआ जिस दिन पंजाब में बैसाखी मनाई जा रही थी ।
- जेनरल डायर ने निकलने के रास्ते बंद करवा दिये और भीड़ पर गोली चलवा दी।
- इस दुर्घटना में सैंकड़ो लोग मारे गए । सरकार का रवैया बड़ा ही क्रूर था । इससे चारों तरफ हिंसा फैल गई। महात्मा गांधी ने आंदोलन को वापस ले लिया क्योंकि वे हिंसा नहीं चाहते थे।

जलियावाला बाग हत्याकांड का प्रभाव

- भारत के बहुत सारे शहरों में लोग सड़कों पर उतर आए।
- हड़ताले होने लगी ,लोग पुलिस से मोर्चा लेने लगे और सरकारी इमारतों पर हमला करने लगे
- सत्याग्रहियो को जमीन पर नाक रगड़ने के लिए ,सड़क पर घिसकर चलने और सारे 'साहिबों '(अंग्रेजों) को सलाम करने के लिए मजबूर किया गया।
- लोगों को कोड़े मारे गए तथा गुजरांवालां (पंजाब) के गांवों पर बम बरसाये गए।

खिलाफत का मुद्दा

- खिलाफत शब्द 'खलीफा' से निकला हुआ है जो ऑटोमन तुर्की का सम्राट होने के साथ – साथ इस्लामिक विश्व का आध्यात्मिक नेता भी था।
- प्रथम विश्व युद्ध में तुर्की की हार हुई थी यह अफवाह फैल गई थी कि तुर्की पर एक अपमानजनक संधि थोपी जाएगी। इसलिए खलीफा की तात्कालिक शक्तियों की रक्षा के लिए मार्च 1919 में अली बंधुओं द्वारा बम्बई में एक खिलाफत समिति का गठन किया गया ।

महात्मा गांधी ने क्यों खिलाफत का मुद्दा उठाया

उन्हे विश्वास था कि बिना हिंदू और मुस्लिम को एक दूसरे के समीप लाए ऐसा कोई अखिल भारतीय आंदोलन खड़ा नही किया जा सकता इसलिए उन्होने खिलाफत का मुद्दा उठाया ।

हिंद स्वराज

महात्मा गांधी द्वारा लिखित प्रसिद्ध पुस्तक, जिसमें भारत में ब्रिटिश शासन के असहयोग पर जोर दिया गया था

असहयोग आंदोलन

- अपनी प्रसिद्ध पुस्तक स्वराज (1909) में महात्मा गाँधी ने लिखा कि भारत में अंग्रेजी राज इसलिए स्थापित हो पाया क्योंकि भारतीयों ने उनके साथ सहयोग किया और उसी सहयोग के कारण अंग्रेज हुकूमत करते रहे ।

- यदि भारतीय सहयोग करना बंद कर दें , तो अंग्रेजी राज एक साल के अंदर चरमरा जायेगी और स्वराज आ जायेगा ।
- गाँधीजी को विश्वास था कि यदि भारतीय लोग सहयोग करना बंद करने लगे , तो अंग्रेजों के पास भारत को छोड़कर चले जाने के अलावा और कोई चारा नहीं रहेगा।

असहयोग आंदोलन के मुख्य प्रस्ताव

- अंग्रेजी सरकार द्वारा प्रदान की गई उपाधियों को वापस करना ।
- सिविल सर्विस , सेना , पुलिस , कोर्ट , लेजिस्लेटिव काउंसिल और स्कूलों का बहिष्कार ।
- विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार ।
- यदि सरकार अपनी दमनकारी नीतियों से बाज न आये , तो संपूर्ण अवज्ञा आंदोलन शुरु करना ।

शहरों में असहयोग आंदोलन का धीमा पड़ना

- चक्की के कपड़े की तुलना में खादी का कपड़ा अधिक महंगा था और गरीब लोग इसे खरीद नहीं सकते थे।
- छात्रों और शिक्षकों ने सरकारी स्कूलों में वापस आना शुरू कर दिया और वकील सरकारी अदालतों में काम से जुड़ गए ।
- फरवरी 1922 में महात्मा गांधी ने आंदोलन वापस ले लिया क्योंकि चौरी चौरा में हिंसक घटना हो गई थी।

चौरी चौरा की घटना

फरवरी 1922 में , गांधीजी ने नो टैक्स आंदोलन शुरू करने का फैसला किया । बिना किसी उकसावे के प्रदर्शन में भाग ले रहे लोगों पर पुलिस ने गोलियां चला दीं । लोग अपने गुस्से में हिंसक हो गए और पुलिस स्टेशन पर हमला कर दिया और उसमें आग लगा दी । यह घटना उत्तर प्रदेश के चौरी चौरा में हुई थी ।

सविनय अवज्ञा आंदोलन

सी आर दास तथा मोती लाल नेहरू द्वारा 'स्वराज पार्टी' (जनवरी 1923) का गठन ताकि प्रांतीय परिषद के चुना में हिस्सा ले सकें । विश्वव्यापी आर्थिक मंदी की वजह से कृषि उत्पाद की कीमतों में भारी गिरावट आई । ग्रामीण इलाकों में भारी उथल पुथल ।

साइमन कमीशन

- 1927 में ब्रिटेन में साइमन कमिशन का गठन ताकि भारत में सवैधानिक व्यवस्था की कार्यशैली का अध्ययन किया जा सके।
- 1928 में साइमन कमीशन का भारत आना– पूरे भारत में विरोध प्रदर्शन हुआ।
- कांग्रेस ने इस आयोग का विरोध किया क्योंकि इसमें एक भी भारतीय शामिल नही था ।
- दिसंबर 1929 में जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन हुआ था । इसमें पूर्ण स्वराज के संकल्प को पारित किया गया ।
- 26 जनवरी 1930 को स्वाधीनता दिवस घोषित किया गया

नमक यात्रा और असहयोग आंदोलन (1930)

- जनवरी 1930 में महात्मा गांधी ने लार्ड इरविन के समक्ष अपनी 11 मांगे रखी ।
- ये मांगे उद्योगपतियो से लेकर किसान तक विभिन्न तबके से जुड़ी हुई थी ।
- इनमें सबसे महत्वपूर्ण मांग नमक कर को खत्म करने की थी ।
- लार्ड इरविन इनमें से किसी भी माँग को मानने के लिए तैयार नही थे ।
- 12 मार्च 1930 को महात्मा गांधी द्वारा नमक यात्रा की शुरूआत ।
- 6 अप्रैल 1930 को नमक बनाकर नमक कानून का उल्लंघन यह घटना सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरूआत थी ।
- 5 मई 1931 ई को गाँधी इरविन समझौता

आंदोलन में किसने भाग लिया ?

- ग्रामीण इलाकों में , गुजरात के अमीर पाटीदार और उत्तर प्रदेश के जाट आंदोलन में सक्रिय थे । चूंकि अमीर समुदाय व्यापार अवसाद और गिरती कीमतों से बहुत प्रभावित थे , वे सविनय अवज्ञा आंदोलन के उत्साही समर्थक बन गए ।
- व्यापारियों और उद्योगपतियों ने आयातित वस्तुओं को खरीदने और बेचने से इनकार करके वित्तीय सहायता देकर आंदोलन का समर्थन किया ।
- नागपुर क्षेत्र के औद्योगिक श्रमिक वर्ग ने सविनय अवज्ञा आंदोलन में भी भाग लिया ।
- रेलवे कर्मचारियों , डॉक वर्कर्स , छोटा नागपुर के खनिज आदि ने विरोध रैली और बहिष्कार अभियानों में भाग लिया ।

सविनय अवज्ञा आंदोलन के प्रति लोगों और औपनिवेशिक सरकार ने की प्रतिक्रिया

- लोगों ने सरकारी कानूनों को भंग करना शुरू कर दिया ।
- आंदोलन को दबाने के लिए सरकार ने कठोरता से काम लिया ।
- हजारों जेल गए । गाँधीजी को कैद कर लिया गया ।
- अब जनता इसमें बढ़ – चढ़कर भाग लेने लगी ।
- महिलाओं व बच्चों की पिटाई । लगभग 1,00,000 गिरफ्तार

सविनय अवज्ञा आंदोलन में महिलाओं की भूमिका

- औरतों ने बहुत बड़ी संख्या में गाँधी के नमक सत्याग्रह में भाग लिया ।
- हजारों औरतें उनकी बात सुनने के लिए यात्रा के दौरान घरों से बहार आ जाती थीं ।
- उन्होंने जलूसों में भाग लिया , नमक बनाया , विदेशी कपड़ों और शराब की दुकानों की पिकेटिंग की ।
- कई महिलाएँ जेल भी गईं । ग्रामीण क्षेत्रों की औरतों ने राष्ट्र की सेवा को अपना पवित्र दायित्व माना ।

सविनय अवज्ञा आंदोलन की सीमाएँ

- अनुसूचित की भागीदारी नहीं थी क्योंकि लंबे समय से कांग्रेस इनके हितों की अनदेखी कर रही थी ।
- मुस्लिम संगठनो द्वारा सविनय अवज्ञा के प्रति कोई खास उत्साह नही था क्योंकि 1920 के दशक के मध्य से कांग्रेस ' हिंदू महासभा ' जैसे हिंदू धार्मिक संगठनों के करीब आने लगी थी ।
- दोनो समुदायों के बीच संदेह और अविश्वास का माहौल बना हुआ था ।

सामूहिक अपनेपन का भाव

- **चित्र व प्रतीक** भारत माता की प्रथम छवि बंकिम चन्द्र द्वारा बनाई गई । इस छवि के माध्यम से राष्ट्र को पहचानने में मदद मिली ।
- **लोक कथाएँ** राष्ट्रवादी घूम घूम कर इन लोक कथाओं का संकलन करने लगे ये कथाएँ परंपरागत संस्कृति की सही तस्वीर पेश करती थी तथा अपनी राष्ट्रीय पहचान को ढूढने तथा अतीत में गौरव का भाव पैदा करती थी ।
- **चिन्ह झंडा** बंगाल में 1905 में स्वदेशी आंदोलन के दौरान सर्वप्रथम एक तिरंगा (हरा, पीला, लाल) जिसमें 8 कमल थे 1921 तक आते आते महात्मा गांधी ने भी सफेद , हरा और लाल रंग का तिरंगा तैयार कर लिया था ।
- **इतिहास की पुर्नव्याख्या** बहुत से भारतीय महसूस करने लगे थे कि राष्ट्र के प्रति गर्व का भाव जगाने के लिए भारतीय इतिहास को अलग ढंग से पढ़ाना चाहिए ताकि भारतीय गर्व का अनुभव कर सकें ।